वार्षिक 150/- रुपये जून 2024 वर्ष 26 अंक 08 पृष्ठ - 28 मूल्य 15/-रु.

गोसम्पदा

गोवंश-रक्षा के लिए विशेष आग्रही थे गुरुजी

सम्पादकीय

गोलवलकर जी की पुण्यतिथि (पांच जून) पर विषेश

गोवंश-रक्षा के लिए विशेष आग्रही थे गुरुजी

आदिकाल से ही आध्यात्मिक–अहिंसक राष्ट्र भारतवर्ष में गोमाता को सम्पूर्ण 84 लाख योनियों में सर्वोच्च स्थान दिया गया है। सभी योनियों में केवल और केवल उसके ही गोबर–गोमूत्र को पवित्र–पावन स्वीकार किया गया है। सत्य यह है कि आज चारों ओर सभी प्रकार की जो भीषण–विकराल समस्यायें दृष्टिगोचर हो रही हैं उन सभी का समाधान करने में सक्षम हैं हमारी गोमाता। गोवंश आधारित कृषि के माध्यम से ही किसानों द्वारा की जा रही आत्महत्याओं को भी रोक पाना संभव है, अन्य किसी भी उपाय से नहीं।

दुर्भाग्य से आजादी के पूर्व से ही की जा रही गोवंश–हत्या को आज तक मात्र अल्पसंख्यक तुष्टिकरण वोट राजनीति के कारण ही नहीं रोका जा सका है और अभी भी षड्यंत्रपूर्वक साम्प्रदायिक वैमनस्यता फैलाने के नाम पर रोकने का हर संभव कुत्सित प्रयास किया जा रहा है। सच तो यह है कि अंग्रेजों ने भारत आगमन के कुछ समय पश्चात् ही देश में गो–हत्या प्रारंभ करा दी थी। उन्होंने **'फूट डालो राज करो'** नीति के तहत योजनाबद्ध ढंग से हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच शत्रुता पैदा करने के उद्देश्य से गोहत्या आरंभ कराई थी और वे अपने षड्यंत्र में काफी हद तक सफल भी रहे। दुष्परिणामस्वरूप आजादी मिलने के 75–76 वर्ष बाद भी गोहत्या जैसा अक्षम्य–जघन्य अपराध बंद होने की बजाय बढ़ता ही गया। हाँ, भाजपा सरकार आने के बाद अब अनेक राज्यों में गोवंश–हत्या–तस्करी में काफी कमी दिखलाई दे रही है। इस पावन कार्य के लिए भाजपा सरकार साधुवाद की पात्र है।

उल्लेखनीय है कि स्वाधीन भारत में गोवंश रक्षा के लिए अनेक प्रयत्न और संघर्ष हुए। राष्ट्रव्यापी जनआंदोलन–धरने–प्रदर्शन और आमरण अनशन भी किये गये। अनेक साधु–संतों एवं महापुरुषों ने अपने प्राणों की आहुति भी दी। इन आंदोलनों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का भी अमूल्य योगदान रहा है।

संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरुजी (गोलवलकरजी) के मार्गदर्शन में इस विषय पर सन् 1952 में संघ प्रतिनिधि सभा में एक विशेष प्रस्ताव पारित हुआ था। तदुपरांत संघ ने राष्ट्रीय स्तर पर हस्ताक्षर अभियान चलाया और श्री गुरुजी ने 8 दिसंबर, 1952 को लाला हंसराज जी गुप्त के साथ लगभग पौने दो करोड़ हस्ताक्षर समर्थित ज्ञापन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी को सौंपा था। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस हस्ताक्षर संग्रह पर काफी बड़ी संख्या में मुस्लिम एवं ईसाई बंधुओं ने भी हस्ताक्षर किये थे। विश्व में शायद ही ऐसा कोई जनआंदोलन चला हो जिसमें इतने व्यापक स्तर पर जन–सहभागिता रही हो। इसी प्रकार **7 नवंबर 1966** को दिल्ली के संसद मार्ग पर साधु–संतों ने गोहत्या बंदी की मांग को लेकर विशल प्रदर्शन किया था। तब तत्कालीन प्रधानमंत्री के कथित आदेश से पुलिस ने अंधाधुंध गोलियां चलाकर सैकड़ों साधु–संतों को मौत के घाट उतार दिया था। 2010 में भी **'विश्वमंगल गो ग्राम यात्रा'** के माध्यम से गोवंश की रक्षा के लिए संपूर्ण देश में जन–जागरण अभियान चलाया गया। बावजूद इसके 'मुस्लिम तुष्टिकरण नीति के कारण गोवंश–हत्या को आज तक नहीं रोका जा सका। फलस्वरूप गोवंश की दर्जनों उत्तम प्रजातियां (नस्लें) विलुप्त हो चुकी हैं और शेष बचीं नस्लें समाप्ति की कगार पर हैं। वास्तव में श्री गुरुजी की जीवन दृष्टि मानवीय, व्यापक एवं अतिसूक्ष्म थी। प्राणीमात्र के कल्याण की उदात्त भावना उनके हृदय में नैसर्गिकरूप से विद्यमान थी। इसीलिए वे गोवंश–रक्षा के लिए विशेष आग्रही थे। गुरुजी का कहना था कि "अपने देश में गोवंश रक्षण–संवर्धन का विषय न केवल आर्थिक दृष्टि से बल्कि हमारी सांस्कृतिक श्रद्धा–आस्था और एकात्मता की दृष्टि से भी अतिशय महत्वपूर्ण है। क्योंकि जिस राष्ट्र का श्रद्धास्थान नष्ट हो जाता है उस राष्ट्र के अभ्युदय की कामना करना व्यर्थ होगा। उनका मानना था कि अपने राष्ट्र में राजनीतिक या पांथिक भिन्नता भले ही हो, एक बात निर्विवाद सत्य है कि गोमाता (गोवंश) का नाम लेते ही सभी लोगों में श्रद्धा–आस्था की अतुलनीय भावना जाग्रत हो जाती है।

अतः हम अपने हृदय में गोमाता के प्रति श्रद्धाभाव बढ़ाएं। अपने अंतःकरण तथा राष्ट्रजीवन में पराकोटि की तेजस्विता निर्माण करें। हम स्वातंत्र्य के सच्चे गौरव की अनुभूति तभी कर सकेंगे जब युगों से चले आ रहे राष्ट्रीय सम्मान के बिंदुओं एवं परम्पराओं का देशवासियों के हृदयों में दीप्तिमानस्वरूप में पुनः प्रतिष्ठापन एवं अर्चन हो सके।"

(सम्पादक)

गोसम्पदा

वर्ष – 26 अंक–08 जून – 2024 पृष्ठ – 28

संरक्षक :
हुकुमचंद सावला जी

अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख
दिनेश उपाध्याय जी
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली–22
मो. : 9644642644
ईमेल : gosampada@gmail.com

सम्पादक :
देवेन्द्र नायक
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली–22
मो. : 8130049868 कार्या. 011–26174732
ईमेल : gosampada@gmail.com

परामर्शदाता : प्रो. गुरुप्रसाद सिंह जी
मो. : 9838900596

प्रकाशक : राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी
मो. : 9810055638

प्रचार–प्रसार प्रमुख : जय प्रकाश गर्ग जी
मो. : 9654414174

व्यवस्थापक : रामानन्द यादव
मो. : 9958710672 कार्या. : 011–26174732

साज–सज्जा : सुमन कुमार

वैधानिक सूचना
'गोसम्पदा' से संबन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 माह के अंदर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में मान्य होंगे

सहयोग राशि
एक प्रति : रु. 15/–
वार्षिक : रु. 150/–
आजीवन : रु. 1500/–

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
गाय, गांव और पर्यावरण संरक्षण	04
ग्रीष्म ऋतु और पंचगव्य	06
भारतीय गाय : धर्म या विज्ञान	08
गोमाता का वैज्ञानिक माहात्म्य	11
बहुला गाय, एक पौराणिक आख्यान	12
'बरगुर' भारतीय गाय की नस्ल	15
फुरसत के पल का सदुपयोग – गौसेवा	17
तेलंगाना गोरक्षा विभाग की बैठक	20
गोरक्षकों ने जान जोखिम में डालकर गोवंश से भरी कंटेनर पकड़ी	21
'अहिंसा परमो धर्मः'	22
Relating Artificial Intelligence (AI) with Cow Science for Sustainable Development	23

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त–गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं–

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली
खाता नम्बर – 04072010038910
IFSC CODE : PUNB0040710

नोट : शुल्क **"भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद"** के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011–26174732

विजय कुमार (निदेशक, विश्व संवाद केन्द्र, देहरादून)

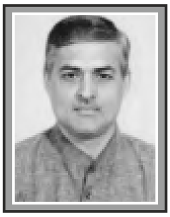

पर्यावरण दिवस (5 जून) पर विशेष

गाय, गांव और पर्यावरण संरक्षण

ग्राम्य जीवन का बहुत बड़ा आधार गाय है। गाय से प्राप्त दूध, दही, घी आदि हमें स्वस्थ रखते हैं। गोबर और गोमूत्र से अच्छी खाद और कीटनाशक बनते हैं। मरने के बाद भी उसकी खाल और सींग के अनेक उपयोग हैं। गियर और हल्के पहिये लगाकर कुछ वैज्ञानिकों ने बैलगाड़ी को उन्नत किया है। इससे ग्राम्य परिवहन की गति बढ़ी है। इस ओर यदि कुछ और शोध हो तो गोवंश के बल पर ग्राम स्वावलम्बी हो सकता है।

इन दिनों पूरा विश्व पर्यावरण के संकट से जूझ रहा है। इसे क्षति पहुंचाने के सबसे बड़े अपराधी दुनिया के वे तथाकथित विकसित देश हैं, जो दुनिया के हर संसाधन को अपनी झोली में डाल लेना चाहते हैं। ग्रीन हाउस गैसों का सर्वाधिक उत्सर्जन वही कर रहे हैं, जिससे ओजोन परत लगातार क्षतिग्रस्त हो रही है। विश्वव्यापी गर्मी (ग्लोबल वार्मिंग) का कारण यही है। भारत में पर्यावरण को सर्वाधिक क्षति शहरीकरण से हुई है। गांधीजी भारत को एक ग्रामीण देश बनाना चाहते थे; परन्तु जवाहरलाल नेहरू शहरों के पक्षधर थे। उन्हें खेती की बजाय उद्योगों में भारत की उन्नति नजर आती थी। उनके प्रधानमंत्री बनने से ग्रामीण विकास की गति अवरुद्ध हो गयी और शहरीकरण बढ़ने लगा। पर्यावरण का संकट इसी का दुष्परिणाम है।

पश्चिमी देशों का कहना है कि प्राणियों के गोबर और जुगाली से मीथेन गैस निकलती है, जो बढ़ते तापमान का प्रमुख कारण है। वे चाहते हैं कि प्राणियों को क्रमशः समाप्त कर खेती मशीनों से हो; पर सच यह है कि सबसे अधिक (21.3 प्रतिशत) ग्रीन हाउस गैसें विद्युत निर्माण संयंत्रों से निकलती हैं। इनमें परमाणु ऊर्जा से बनने वाली बिजली का योगदान सर्वाधिक है। इसके बाद 16.8 प्रतिशत ग्रीन हाउस गैसें औद्योगिक इकाइयों से तथा 14 प्रतिशत परिवहन से उत्पन्न होती हैं। इन दिनों अन्न के बदले जैविक ईंधन उगाने का फैशन चल निकला है। इससे भी 11.3 प्रतिशत ग्रीन हाउस गैसें उत्पन्न हो रही हैं। स्पष्ट है कि वैश्विक गरमी का कारण परम्परागत कृषि प्रणाली नहीं, अपितु उन्नत देशों की मशीनी पद्धति है।

कम्प्यूटर ने जीवन को आसान बनाया है। अतः इसका विरोध करने का कोई कारण नहीं है; पर एक कम्प्यूटर 200 वाट बिजली खाता है और कार्यालय खुलने से लेकर बंद होने तक सब कम्प्यूटर चलते रहते हैं। इनका उपयोग कार्यालय संबंधी काम में कम और निजी ई.मेल, चैटिंग और देश–विदेश में फोनवार्ता आदि में अधिक हो रहा है। मोबाइल इन दिनों जीवन की अनिवार्यता बन गये हैं; पर हर समय कान में घुसी

'कनखूंटी' से युवा पीढ़ी कान और मस्तिष्क रोगों की शिकार भी हो रही है। ट्विटर और फेसबुक से चिपके छात्र हर दिन अपने खेलकूद का पूरा समय इसी में खर्च कर देते हैं। इसका असर जहां उनकी पढ़ाई पर पड़ रहा है, वहीं वे मोटे भी हो रहे हैं। मोबाइल टावर हर साल 60 करोड़ लीटर डीजल पी जाते हैं। इनसे निकलने वाली ध्वनि तरंगों के कारण मधुमक्खी, तितली और गौरैया जैसे मानवमित्र कीट और पक्षी समाप्त हो रहे हैं।

परिवहन के आधुनिक साधनों ने दूरियां घटाई हैं; पर दुनिया का 60 प्रतिशत तेल इसमें खर्च होता है। एक बोइंग 747 विमान दो मिनट में जितनी ऊर्जा खर्च करता है, उससे घास काटने वाली एक लाख मशीनें आठ घंटे तक चल सकती हैं। वैश्विक कार्बन उत्सर्जन का दो प्रतिशत वायुयानों के कारण है। बड़े नगरों में दो–तीन घंटे घर से दूकान या कार्यालय आने–जाने में लगते हैं। अतः लोग न परिवार को समय दे पाते हैं और न अपने स्वास्थ्य को। बच्चे भी पढ़ने के लिए बस या टैक्सी में बैठकर दस–बीस कि.मी. दूर जाते हैं। इस दौरान लाल बत्ती और जाम से कितनी प्रदूषित वायु फेफड़ों में जम जाती है, कहना कठिन है। ये वाहन तेल से चलते हैं, जो भरपूर प्रदूषण फैलाते हैं। इस भागमभाग से दुर्घटनाएं भी बढ़ रही हैं। शहर में हर व्यक्ति औसतन 300 लीटर पानी भी हर दिन खर्च कर देता है।

दूसरी ओर ग्राम्य जीवन सरल और न्यूनतम आवश्यकताओं पर आधारित है। घर से खेत, विद्यालय और बाजार की दूरी कम होने के कारण आसानी से लोग पैदल या साइकिल से चले जाते हैं। पेड़–पौधे और नदी–तालाब के कारण मौसम न अधिक ठंडा होता है और न अधिक गरम। गरमी में लोग पेड़ के नीचे, तो सरदी में अलाव के पास बैठकर शरीर को आराम देते हैं। वहां शहर की तरह कूलर या हीटर की जरूरत नहीं होती। अब तो गोबर से गैस और बिजली भी बनने लगी है। ग्राम्य जीवन संतोष देता है, जबकि शहरी जीवन तनाव। इसलिए इन दोनों में कुछ संतुलन होना चाहिए। गांवों में आवश्यक बिजली, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि की सुविधा पहुंच जाए, तो लोग शहरों की ओर भागना बंद कर देंगे।

ग्राम्य जीवन का बहुत बड़ा आधार गाय है। गाय से प्राप्त दूध, दही, घी आदि हमें स्वस्थ रखते हैं। गोबर और गोमूत्र से अच्छी खाद और कीटनाशक बनते हैं। मरने के बाद भी उसकी खाल और सींग के अनेक उपयोग हैं। गियर और हल्के पहिये लगाकर कुछ वैज्ञानिकों ने बैलगाड़ी को उन्नत किया है। इससे ग्राम्य परिवहन की गति बढ़ी है। इस ओर यदि कुछ और शोध हो तो गोवंश के बल पर ग्राम लगभग स्वावलम्बी हो सकता है।

अर्थात यदि पर्यावरण बचाना है तो गांव में जाना होगा। इसका अर्थ वहां शहरों जैसी सुविधाएं जुटाना नहीं, अपितु साधारण जीवन शैली को अपनाना है। इसमें गाय केन्द्र बिन्दु बन सकती है। यदि नौकरी अथवा व्यापार के दौरान शहर में रहने वाले लोग अवकाश प्राप्ति के बाद संतोषी जीवन का व्रत लेकर अपने मूल गांव में बसने लगें, तो उनके अनुभव और योग्यता का लाभ पूरे गांव के साथ–साथ गोवंश को भी मिलेगा।

वैद्य नंदिनी भोजराज (एम.डी., आयुर्वेद)

ग्रीष्म ॠतु और पंचगव्य

भारतीय वंश की स्वस्थ गाय से प्राप्त होने वाली पाँच चीजें यानी **'पंचगव्य'।** गाय का दूध, गाय के दूध से बना दही, गाय के दूध से मलाई के साथ तैयार किए गए दही को मंथनकर निकाला ''मक्खन'' गरम करके बनाया गया ''गोघृत'', गोमूत्र एवम् गोबर पंचगव्य में शामिल रहते हैं। निसर्ग में प्रत्येक वस्तु के अपने गुण होते हैं। उन्हीं गुणों के आधार पर उनका परिणाम उन्हें सेवन करने वालों को प्राप्त होता है। अतः किस ॠतु में कौन–से पंचगव्य का उपयोग करें एवम् कौन–से पंचगव्य को कुछ समय के लिए बंद करें, इसके लिए पंचगव्य आयुर्वेद के चिकित्सकों से परामर्श करना आवश्यक है।

सर्वप्रथम गव्य के रूप में दूध का ही नाम लिया जाता है। गाय का दूध गुण में शीतल एवम् पचने में थोड़ा भारी बताया गया है। गाय अगर एक जगह बंधी ही रखी जाती हो तब तो उसका दूध पचने में सामान्य गाय के दूध से भी ज्यादा भारी होगा। गोवंश को नित्य लगभग पांच किलोमीटर घूमना अनिवार्य है, ऐसा बताया गया है। उनके शरीर में लाघवता रहेगी तब उनसे प्राप्त होने वाला गोदुग्ध भी पचने में अधिक भारी नहीं होगा। आधुनिक विज्ञान के आधार पर दूध का PH 6.8 कहा–माना जाता हैं। अतः दूध अंशतः अम्ल गुणधर्मीय ही कहा जाता है। इस दूध से जब हम दही जमाते हैं तब दही अधिक आम्लता देता है। दही का PH 5 से लेकर एक दम खट्टे दही का PH3.5-3 भी रहता है। अतः हमें यह ध्यान में रखना है कि अगर हम अम्ल दही का सेवन करते हैं तब हम शरीर की अम्ल गुण की (Acid) वृद्धि करते हैं। ग्रीष्म ॠतु

गाय का दूध, गाय के दूध से बना दही, गाय के दूध से मलाई के साथ तैयार किए गए दही को मंथनकर निकाला ``मक्खन'' गरम करके बनाया गया ``गोघृत'', गोमूत्र एवम् गोबर पंचगव्य में शामिल रहते हैं। निसर्ग में प्रत्येक वस्तु के अपने गुण होते हैं। उन्हीं गुणों के आधार पर उनका परिणाम उन्हें सेवन करने वालों को प्राप्त होता है।

में शरीर से पसीने के द्वारा बड़ी मात्रा में जल शरीर से बाहर निकल जाता है। वातावरण में भी रुक्षता–रूखापन होने से शरीर में तैयार त्याज्य पदार्थ बाहर डालने के लिए मूत्र की मात्रा उचित बननी चाहिए। हमारा मूत्र अति गहरा पीला नहीं आना चाहिए। उसके लिए भी शरीर की गर्मी अत्यधिक बढ़ना ठीक नहीं होता। अम्ल गुणात्मक (Acidic Substone) पदार्थ के अधिक सेवन से शरीर के रक्त में भी अम्लता प्रमाण से अत्यधिक बढ़कर व्याधियों की उत्पत्ति होने लगती है। सम्पूर्ण भारत में सामान्यतः तक्र (छाछ) का सेवन ग्रीष्म ऋतु में अधिक किया जाता है। छाछ में ठंडा पानी हम फ्रिज का डालें या मटके का परंतु उसका मूल गुण तो अम्लीय (Acidic) ही है। अतः अगर हम ग्रीष्म ऋतु में छाछ सेवन करते हैं तब शरीर में रुक्षता एवम् अम्ल गुण के कारण गर्मी अधिक बढ़ती है। परिणामस्वरूप नाक से खून आना, संडास के मार्ग से खून निकलना आदि अधिक दिखाई देता है। उस समय हमें दही–छाछ का सेवन पूर्ण रूप से बंद कर देना चाहिए। आज का बना ताजा मक्खन मिश्री के साथ सेवन करें। यह शीतलता देता है। कभी–कभी नागकेसर का चूर्ण भी ताजी मलाई या मक्खन के साथ चिकित्सक के मार्गदर्शन में सेवन कर सकते हैं।

ग्रीष्म ऋतु में उपरोक्त पद्धति से बनाया गया गाय का घी आयु के अनुरूप नित्य सुबह–शाम भोजन के साथ सेवन करें। गोघृत की दो बुंद नाभी में भी सोते समय डालें। पाँव के तलुओं में सोते समय गोघृत से लगभग दस मिनट मालिश करें। गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र देवलापार में बना चंदनादि यमक चेहरे पर या जो शरीर का भाग खुला रहता है जिस कारण से वहाँ की त्वचा में कालापन आता है, वहाँ नित्य लगाएं। इसे सुबह उठते ही या शाम को घर आने के बाद हांथ–पाँव की त्वचा धोकर फिर लगाएं। **शतधौत घृत तो स्पर्श के साथ ही ठंडक देता है।**

शरीर की अंदरूनी गर्मी कम करने के लिए पंचतिक्त घृत, लघुसूतशेखर का भी सेवन चिकित्सक के परामर्श से करने से लाभ निश्चित होता है। औषधि के साथ–साथ अगर हम खाने में परहेज रखते हैं तब तो लाभ अधिक मिलता है। हमारे शरीर में Acidity बढ़ाने वाले पदार्थ अद्रक, लहसुन, सरसों, गरम मसाले के पदार्थ, लौंग, गुड़, शहद आदि का सेवन अतिसंभलकर करें या न करना अधिक लाभदायक है। पुदीना, गीला नरियल, हरा धनिया, चंदन, गुलाब, बड़ी सौंप, आंवला, मूंगदाल, अनार आदि पदार्थ शरीर की गर्मी को कम करते हैं। लाल चावल भी गुण में शीतलता देता है।

अधिक जानकारी के लिये गोविज्ञान अनुसंधान केंद्र, देवलापार के महल, शिवाजी नगर नागपुर के चिकित्सा केंद्र से संपर्क करें।

फोन : 9422808175

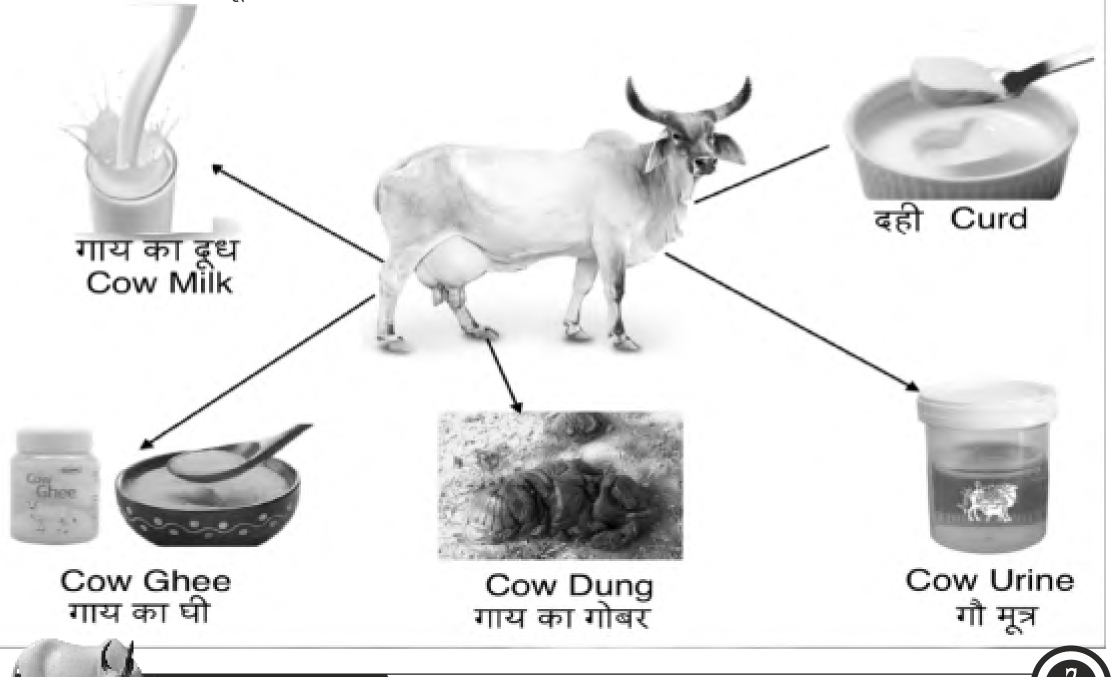

मीनाक्षी शर्मा ''तारिका''

भारतीय गाय : धर्म या विज्ञान

**"यया सर्व मिदं व्याप्तं जगत् स्थावर्जन्मम ।
तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम् ।। "**

अर्थात् जिसने चराचर जगत को व्याप्त कर रखा है,उस भूत और भविष्य की जननी गोमाता को मैं सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ ।

हिन्दू धर्म के पवित्र ग्रन्थ भागवत् पुराण के अंतर्गत समुद्र मंथन के दौरान दिव्य वैदिक गाय (गोमाता) की उत्पत्ति का वर्णन मिलता है। शास्त्रों के मतानुसार ब्रह्मा जी ने जब सृष्टि की रचना की तो उन सभी जीवों में एकमात्र गाय ही ऐसा प्राणी है जिसकी वाणी में माँ शब्द समाहित है। गाय का बछड़ा जब रंभाता है तो माँ शब्द अनुनादित होता है। ऐसी मान्यता है कि मनुष्यों ने गोवंश से ही माँ शब्द को ग्रहण किया है। श्री कृष्ण लीला में बहुला गाय की कथा मिलती है, जो कि गाय के वात्सल्य भाव व उसकी स्नेहिल सरसता को दर्शाती है। इतना ममत्व माता में ही विद्यमान होता है। इसी कारण भारतीय संस्कृति में गाय को माता का स्थान दिया गया है। जिस प्रकार माँ अपने बच्चे का लालन–पालन करती है उसी प्रकार गाय का दूध भी मनुष्य का लालन–पालन व उसके स्वास्थ्य की सुरक्षा करता है। यदि किसी कारणवश कोई माता शिशु को अपना दूध पिलाने में असमर्थ होती है तो उस अवस्था में चिकित्सकों के मतानुसार शिशुओं के लिए गाय का ही दूध सर्वोत्तम माना गया है। गाय का दूध भैंस के दूध की तुलना में कम गरिष्ठ होता है जिससे वह पचने में आसान होता है। गाय का दूध छः महीने से दस साल तक पिलाने से बच्चे ज्यादा क्रियात्मक व सक्रिय होते हैं। गाय के दूध में पाया जाने वाला साइटोकिंस तत्व शरीर में रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ाता है, अतएव भैंस के दूध की तुलना में गाय का दूध सर्वोपरि है। गाय के दूध से निकला घी अमृत कहलाता है। कथानुसार जब अप्सरा उर्वशी ने राजा पुरुरवा के समक्ष अमृत पीने का आग्रह किया तो राजा ने अमृत के स्थान पर गाय का घी पीना ही स्वीकार किया **"घृतं में वीर भक्ष्यं स्यात"** (श्रीमद्भागवत् ६. १४.२२)

सभी जीव–जन्तुओं तथा दुग्धधारी प्राणियों में केवल गाय ही एकमात्र ऐसा प्राणी है, जिसकी १८० फुट लम्बी आँत होती है, जो गाय द्वारा खाए गए

भोजन को पचाने में सहायक होती है। गाय की रीढ़ की हड्डी के भीतर सूर्यकेतु नामक एक नाड़ी होती है जिस पर सूर्य की किरण के स्पर्श से स्वर्ण तत्व का निर्माण होता है। गाय के १ क्विंटल (१००कि.ग्रा.) दूध में एक माशा (लगभग०.६७ कि.ग्रा.) स्वर्ण पाया जाता है, इसी कारण गाय के दूध व घी का रंग हल्का–सा पीला होता है। यह पीलापन गाय के दूध में उपस्थित कैरोटीन नामक तत्व की उपस्थिति के कारण होता है। यदि शरीर में कैरोटीन तत्व की कमी हो जाती है तो मुख, फेंफड़े तथा मूत्राशय में कैंसर होने का खतरा होता है। गाय के दूध में यह कैरोटीन तत्व भैंस के दूध से दस गुना अधिक होता है। वैज्ञानिकों के मतानुसार भैंस के दूध को गर्म करने पर उसके पौष्टिक तत्व समाप्त हो जाते हैं, किन्तु गाय के दूध को गर्म करने पर ऐसा नहीं होता है। हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है–

"या लक्ष्मी सर्वभूतानां सर्वदेवश्वस्थिता,
धेनरूपेन सा देवि मम पापं व्यपोहतु।
नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौर्भेयीश्च एव च,
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च्व पवित्रेभ्यो नमो नमः।।"

अर्थात् जो सब प्रकार की भूति, लक्ष्मी है जो सभी देवताओं में विद्यमान है, वह गौरूपिणी देवी हमारे पापों को दूर करे। जो सभी प्रकार पवित्र है, उन लक्ष्मी रुपी सुरभि कामधेनु की संतान तथा ब्रह्ममुखी गौओं को मेरा बार–बार प्रणाम।

देवनागरी के "ग" वर्ण में गतिमानता का भाव निहित है, सामान्यतया गो शब्द का अर्थ "गाय" है, परन्तु प्राचीनकाल में किसी भी प्राणी के लिए गो शब्द का प्रयोग होता था, ग शब्द में निहित गति का भाव ही इसमें प्रमुख था। सभी प्राणी इधर–उधर गति करते

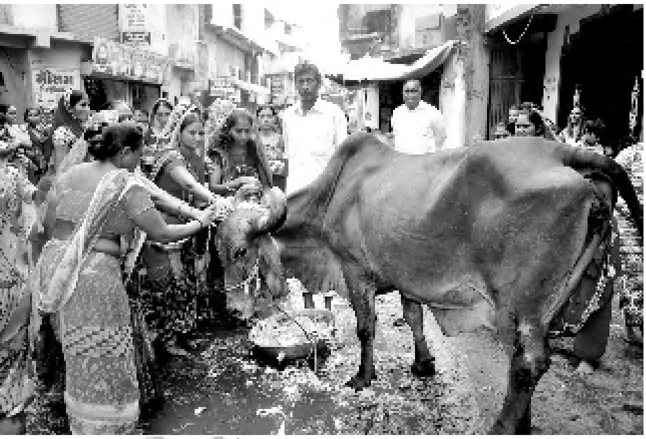

रहते थे, अतः उनके लिए गो शब्द का ही प्रयोग किया जाता था। धार्मिक मान्यता है कि गाय के प्रत्येक अंग में देवताओं का वास होता है, अतएव गो–पूजा से सभी देवताओं की पूजा का फल एक साथ प्राप्त होता है। भविष्यपुराण में बताया गया है कि गाय के सींग में त्रिदेवों का वास होता है, पुराणानुसार गाय के सींग की जड़ में ब्रह्मा और विष्णु समाहित हैं, सींग के मध्य में समस्त तीर्थ व ऊपरी हिस्से में आदिदेव महादेव प्रतिष्ठित हैं। गौ के ललाट में गौरी तथा नासिका के अग्रभाग में भगवान कार्तिकेय प्रतिष्ठित हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी गाय की महत्ता को स्पष्ट किया गया है। गाय के सींग की संरचना पिरामिड जैसी होती है, मान्यता है कि यह आकाशीय ऊर्जा को अवशोषित करती है तथा दूध के माध्यम से यह ऊर्जा मनुष्यों को प्राप्त होती है,जिससे रोगों से बचाव तथा बल प्राप्त होता है। गाय की साँसों में नकारात्मक ऊर्जा को अवशोषित करके सकारात्मक ऊर्जा संचरित करने की अद्भुत शक्ति होती है। ऐसी मान्यता है कि कुछ महीनों तक जहाँ गाय का नित्य वास होता है वहाँ लक्ष्मी का वास होता है, उस भूमि पर घर बनाने से वास्तु दोष नहीं लगता है। माँ के दूध के समान ही गाय का दूध भी पौष्टिक होता है, अतः यह सर्वमान्य व सर्वविदित है तथा शास्त्रों में भी कहा गया है कि – **"गावो विश्वश्व मातरः"** अर्थात् गाय विश्व की माता है।

नवग्रहों–सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, राहु, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, केतु सहित वरुण, वायु आदि देवताओं को यज्ञ में दी हुई प्रत्येक आहुति गाय के घी से देने की परम्परा है, जिससे सूर्य की किरणों की विशेष ऊर्जा मिलती है तथा यही विशेष ऊर्जा वर्षा का कारण बनती है और वर्षा से ही अन्न तथा पेड़–पौधों आदि को जीवन प्राप्त होता है । शास्त्रों के मतानुसार देसी गाय का गोबर बहुत शुद्ध माना गया है, गाय के मुख वाले भाग को अशुद्ध तथा पीछे वाले भाग को शुद्ध माना गया है, साथ ही गाय के गोबर में लक्ष्मी जी का निवास माना गया है। अतः जब भी पूजन, हवन जैसा धार्मिक कार्य किया जाता है तो उस जगह को गाय के गोबर से लीपा जाता है। पौराणिक भारतीय पद्धति के अनुसार रसोईघरों, मुख्यद्वार इत्यादि को गोबर से लीपने की प्रथा चली आ रही है। गोमूत्र में कार्बोलिक अम्ल पाया जाता है, जो कि संक्रामक कीटाणुओं को मार देता है। अतएव घर में यत्र–तत्र गोमूत्र छिड़कने तथा गोबर से लीपने की प्रथा बनायी गयी थी। इसके

साथ ही गाय के गोबर में सूर्य से आने वाली हानिकारक विकिरणों को अवशोषित करने का चमत्कारिक गुण पाया जाता है, जो कि मानवीय स्वास्थ्य के लिए हितकर है एवं घर में प्राणवायु ऑक्सीजन के संचरण में सहायक होता है। **समय के आधुनिक दौर में आज भी गाँव–घरों में सूर्यग्रहण के दौरान गर्भवती महिला की नाभि पर गोबर लगाया जाता है। चूँकि महिला की नाभि से गर्भ में पल रहे शिशु का आहारनाल जुड़ा होता है, अतएव महिला की नाभि पर गोबर का लेप लगा होने से सूर्य से आने वाली हानिकारक विकिरणों का अनापेक्षित रूप से शिशु पर प्रभाव नहीं पड़ता है। यह सारे तथ्य हमारे दैनिक जीवन से जुड़े जीवंत उदाहरण हैं जो देसी गाय के गोबर के प्रयोग का वैज्ञानिक पक्ष भी प्रस्तुत करते हैं।** गर्भावस्था के दौरान यदि गर्भवती स्त्री गोमूत्र व देसी गाय के गोबर का सेवन करे तो प्रसूति सामान्य तरीके से होती है।

नई दिल्ली स्थित पंजाबी बाग इलाके के एक आयुर्वेदिक हॉस्पिटल का दावा है कि देसी गाय के गोबर के लेप से कैंसर के मरीजों की स्थिति को ठीक किया जा सकता है। इंडिया टी.वी. न्यूज डेस्क के १७ जून, २०१७ को प्रकाशित समाचार में इस तथ्य का उल्लेख किया गया था कि "गोधाम आयुर्वेदिक कैंसर ट्रीटमेंट एवं रिसर्च हॉस्पिटल" शिवाजी पार्क, नई दिल्ली में इस प्रकार का इलाज २०१५ से किया जा रहा है। यहाँ मरीजों का इलाज पंचगव्य अर्थात् देसी गाय का मूत्र, गोबर, दूध, दही व घी की निश्चित मात्रा निश्चित समयांतराल व अवधि में देकर किया जाता है। इन सभी में देसी गाय का गोबर व मूत्र बहुत ही लाभकारी है। आयुर्वेद में कैंसर को गाँठ कहा जाता है। इसी गाँठ पर देसी गाय के गोबर का लेप सुबह–शाम लगाया जाता है तथा इस लेप पर सूर्य की किरणों का पड़ना अत्यंत आवश्यक होता है।

गैस व बिजली के दौर में गाँव में आजकल गोबर गैस प्लांट लगाए जाने का प्रचलन प्रारम्भ हो चुका है। पेट्रोल, डीजल, कोयला आदि गैसें तो प्राकृतिक स्रोत हैं जो कि सीमित हैं, परन्तु बायोगैस तो कभी खत्म न होने वाला स्रोत है। जब तक गोवंश है, हम इस ऊर्जा के प्रति आशस्वत रह सकते हैं।

बायोगैस प्लांट के पर्यावरणीय लाभ भी हैं, उदाहरण स्वरुप एक प्लांट से लगभग ७ करोड़ टन लकड़ी बचाई जा सकती है, जिससे लगभग ३ करोड़ पेड़ों को जीवनदान दिया जा सकता है, साथ ही लगभग ३ करोड़ टन उत्सर्जित कार्बन – डाइऑक्साइड (CO_2) की मात्रा को भी नियंत्रित किया जा सकता है।

मिट्टी के संपर्क में आने से गोबर के विभिन्न तत्व व मिट्टी के कण एक दूसरे के अत्यधिक समीप आ जाते हैं या यह भी कहा जा सकता है कि आपस में जुड़े होते हैं, तो ये तत्व उन्हें दूर–दूर कर देते हैं, जिससे मिटटी में हवा का प्रवेश होता है तथा पौधों की जड़ें सरलता से फैल पाती हैं तथा श्वांस ले पाती हैं। इस प्रकार से यह स्पष्ट होता है कि गोमाता की विशिष्टता व व्यापकता सार्वभौमिक है। अतएव सम्पूर्ण मानवजाति का धर्म बनता है कि गोमाता के प्रति अपनी श्रद्धा रखते हुए उनके रख–रखाव तथा उनकी सुरक्षा हेतु प्रण लें एवं कार्यों को कार्यान्वित करें।

सरदारी लाल शारदा

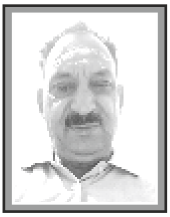

गोमाता का वैज्ञानिक माहात्म्य

सागर–मंथन से कामधेनु की उत्पत्ति हुई। कामधेनु की दिव्यता एवम पवित्रता को देख कर सभी देवी–देवता अतिप्रसन्न हुए, इसलिए कामधेनु गोमाता को लेकर सभी देवता स्वर्गलोक में चले गए। वहां जाने के बाद गोमाता दुःखी रहने लगीं, स्वर्गलोक में किसी भी प्राणी का दुःखी होना स्वर्गलोक मर्यादा के विपरीत होता है। इसलिए गोमाता को वहां दुःखी देखकर सभी देवता अति चिंतित हो गए और गोमाता से उनके दुःखी होने का कारण पूछा। गोमाता ने कहा, हे देवतागण! आप लोगों की कृपा से मुझे स्वर्ग में कोई दुःख नहीं है, फिर भी मेरे दुःखी होने का एक ही कारण है कि मेरे द्वारा प्राप्त दूध, दही, घी गोबर और गोमूत्र का यहां कोई सदुपयोग करने बाला नही है, अतः आप लोग मुझे पृथ्वी लोक में लेकर चलें, जहां मेरे द्वारा प्राप्त दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोबर का सदुपयोग कर संपूर्ण मानवजाति अपना जीवन पवित्र बना सके। इसलिए धरती पर निवास करना ही मेरे लिए उचित स्थान है। सभी देवताओं ने गोमाता की बात को सुन कर गोमाता से बिनती करते हुए कहते हैं–हे गोमाता पृथ्वी पर असुर और स्वार्थी लोग भी रहते हैं, वे लोग आपके द्वारा प्राप्त दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र का उपयोग तो करेंगे, लेकिन आपके द्वारा जिस दिन उन सभी लोगों की स्वार्थ पूर्ति नहीं होगी उस दिन वे लोग आपको अनेक प्रकार के कष्ट देंगे। कसाई के हाथ बेच देंगे। आपके मांस का व्यापार करेंगे। ऐसी परिस्थितियों में आपको पृथ्वी लोक पर जाना उचित नहीं है।

यह सब सुनकर गोमाता देवताओं से कहती हैं, हे देवता फिर भी मेरे लिए उचित स्थान पृथ्वी लोक ही है, क्योंकि अगर मैं पृथ्वी लोक में नहीं जाऊँगी तो पृथ्वी लोक में असुर मानव की संख्या

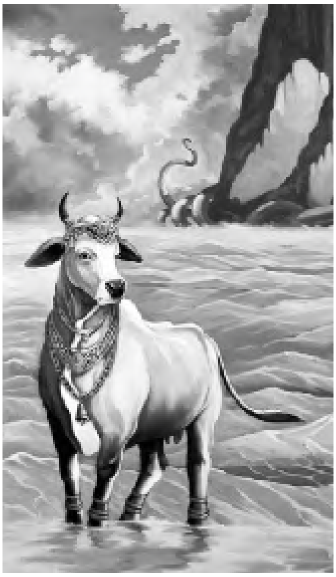

अत्यधिक बढ़ जाएगी, धर्म की शक्ति कमजोर पड़ जाएगी, पाप अत्यधिक बढ़ जाएगा। पृथ्वी पर देव मानव का जन्म लेना दुर्लभ हो गया तो सृष्टि की मर्यादाएं भंग हो जाएंगीं। इसलिए पृथ्वी लोक की रक्षा के लिए पृथ्वी लोक में हमें लेकर चलिये हमारा उचित स्थान वहीं पर है। इस प्रकार सभी देवी–देवता गोमाता के शरीर में अपना–अपना स्थान ग्रहण करते हैं और गोमाता को लेकर पृथ्वी लोक में आ जाते हैं। उसी समय से यह पृथ्वी लोक भी स्वर्गलोक के समान पवित्र बन गया।

तत्पश्चात पृथ्वीलोक में गोमाता का सान्निध्य प्राप्त कर समस्त ऋषि–मुनियों ने पंचगव्य का पान किया जिससे उन्हें आत्मशुद्धि की प्राप्ति हुई। गोघृत से यज्ञ किये, जिससे पृथ्वीलोक में धर्म की उत्पत्ति हुई। धर्म से सृष्टि के सन्तुलन की व्यवस्था बनी और समस्त प्राणी जगत का कल्याण हुआ। इस प्रकार संपूर्ण मानवजाति अतिसौभाग्यशाली है, क्योंकि उनके बीच गोमाता की उपस्थिति है। गोमाता से प्राप्त घी– अग्निदेव का मुख्य भोजन है। गाय का गोबर और गोमूत्र धरती माता का उत्तम भोजन है। दूध, दही, छाछ, मानव का उत्तम भोजन है। गोघृत से यज्ञ करने पर यज्ञ से उत्पन ऊर्जा अंतरिक्ष में प्रसारित होकर ओजोन परत को सन्तुलित करती है और ग्लोबल वार्मिंग को रोकती है। अन्तरिक्ष में सभी ग्रह नक्षत्रों के प्रभाव को सन्तुलित करता है। पृथ्वी पर जल वर्षा का पर्याय बनता है। वही यज्ञ ऊर्जा सूर्य की प्रथम किरण के साथ परिवर्तित होकर जब पृथ्वी पर वापिस आती है तो पृथ्वी के अन्दर गुरुत्वाकर्षण की शक्ति बढ़ जाती है। पृथ्वी पर जीवजगत और वनस्पति फलीभूत होता है।

उसी यज्ञ ऊर्जा को पृथ्वी जब अपने गर्भ में धारण करती है तो पृथ्वी के अन्दर अनेक धातुएं जैसे–सोना चांदी, तांबा, जस्ता, लोहा एल्यूमीनियम, कोयला आदि उत्तम द्रव्य पदार्थ की उत्पत्ति होती है तथा पीने योग्य मीठे जल के स्तर में वृद्धि होती है। धरती में गाय का गोबर और गोमूत्र डालने से सात्विक और उत्तम अन्न, फल, फूल, साग–सब्जी, वनस्पति एवं आयुर्वेदिक जड़ी–बूटियों की उत्पत्ति होती है। गाय के दूध, दही, घी जब मनुष्य ग्रहण करता है तो उसके अन्दर सतोगुण का सृजन होता है। अतः गोमाता की कृपा से धरती के ऊपर वन संपदा, अन्न संपदा, आयुर्वेद संपदा, देवमानव संपदा तथा धरती के नीचे द्रव्य संपदा, जल संपदा आदि की उत्पत्ति होती है। पूर्व काल में भारत की भूमि पर गो–पालन करने के कारण ही यह भूमि अन्न, जल, द्रव्य, देवमानव और वनसंपदा से परिपूर्ण थी। यही गोमाता की महिमा है।

हरिशंकर दीक्षित 'पथिक'

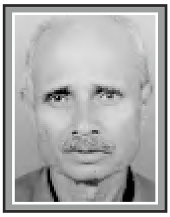

बहुला गाय
एक पौराणिक आख्यान

धरती की शिव–सुन्दर जैव विविधतायुक्त सृष्टि को गतिशील बनाये रखने वाली प्रकृति की शक्ति एवं पर्यावरण को शुद्ध–स्वस्थ बनाये रखने और मानव–जीवनयापन के मूलाधार के रूप में विधाता द्वारा रचे गये गोवंश की दुर्दशा आज का विलास मदमाता मनुष्य निरन्तर करता जा रहा है। इसका परिणाम निकट भविष्य में सृष्टि के समग्र विनाश के रूप में प्रकट होना ध्रुव सत्य है। आदिकाल से ही गोवंश मनुष्यों का शुभ–हित चिन्तक रहा है। प्रस्तुत पौराणिक कथा **'बहुला गाय'** में बहुला गाय तथा उसके वत्स द्वारा सिंह से मानव हित में की गयी प्रार्थना से यह बात स्पष्ट है।

मेरे बाबा अध्यापक थे और सामान्य संस्कृत का ज्ञान उन्हें था। उनके पास बाल्मीकि रामायण, श्रीरामचरितमानस, विश्राम सागर और कवितावली जैसे ग्रन्थ थे। विश्रामसागर मानस की भाँति चौपायी, दोहा, छन्द में रचित ग्रन्थ था। विश्राम सागर में एक आख्यान **''बहुला गाय की कथा''** नाम से था। इसकी पूरी कथा गद्य रूप में मुझे अब तक याद है किन्तु चौपायी केवल एक ही जो प्रारम्भिक है **''कहहुँ कथा शुभ सत्य प्रकासा। बहुला गाय केर इतिहासा।''** याद है। कथा कुछ इस प्रकार है–

एक गोभक्त–सेवक ब्राह्मण के घर पर कुछ गायें थीं। वह उन्हें नित्य प्रति चरवाहे को सौंपकर वन में चरने हेतु भेजता था। पारिश्रमिक रूप में चरवाहे को प्रचलित श्रमफल प्रत्येक माह मिलता था। एक दिन चरने गयी गायों में से ब्राह्मण की बहुला नामक गाय चरते हुए बहुत आगे निकल गयी और एक घात लगाये बैठे सिंह ने उसको घेरकर दबोच लिया। प्राण को संकट में देखकर भी तत्वज्ञानी बहुला ने सिंह से अपने मातृ–कर्तव्य और स्वामी के प्रति अपने अन्तिम कर्तव्य पालन

आज का मनुष्य सत्य– मार्ग पर चलते हुए अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करना चाहता और ऐसा करने वालों को नितान्त मूर्ख मानता है। यहाँ विचारणीय है कि गोवत्स सिंह से विनम्र निवेदन करता है कि माता के स्थान पर वह उसे अपना भोजन बना ले क्योंकि उसकी क्षुधा पूर्ति उसके शरीर से पूर्ण रूप से हो सकती है और माता जीवित रहकर पुन: गर्भ धारणकर गोवंश की वृद्धि के साथ संसार का हित भी करती रहेगी।

हेतु प्रार्थना करते हुए विनम्रतापूर्वक निवेदन किया कि वह उसे दो घड़ी के लिए मुक्त कर दे जिससे वह दिन भर से संचित दुग्ध को अपने वत्स को पिलाकर स्वामी की संतानों के लिए दुहा सके।

सिंह ने कहा, हे गो! तुम मुझे मूर्ख समझती हो जो मैं सुगमता से प्राप्त आखेट को बातों में आकर छोड़ दूं और भूखा रह जाऊँ। इस पर बहुला ने कहा, हे वनराज! आखेट करके भूख शान्त करना आपका स्वाभाविक–गुण है। मेरे जैसे निरीह प्राणी तुम्हारे भोजन के निमित्त ही उत्पन्न हुए हैं। फिर भी पशुओं में श्रेष्ठ मैं कुछ अन्य कारणों से भी मनुष्य से पूर्व रची गयी हूँ। मेरा बछड़ा आज मेरा दूध पी ले और मेरे स्वामी की सन्तानों को भी दुग्ध मिल जाये तो तुम्हारी कोई हानि नहीं होगी। यदि तुम मुझे अभी मारकर खा लोगे तो मेरे शरीर में उत्पन्न दुग्ध व्यर्थ हो जायेगा। यदि मुझे जाने दोगे तो मेरे वत्स के पीते ही शरीर का दुग्ध थनों में आ जायेगा। इससे मेरे वत्स और स्वामी की सन्तानों को दुग्ध प्राप्त होगा और तुम्हें भी इसका पुण्य लाभ होगा। यह सुनकर सिंह ने कहा, हे गो! यदि तू सौगन्धपूर्वक कहे तो मैं तुझे जाने की अनुमति दे सकता हूँ। इस पर बहुला ने कहा, मैं सत्यभगवान की सौगन्ध लेकर कहती हूँ कि यदि मैं तुमसे विश्वासघात करूँ तो मुझे गुरू से दीक्षा लेकर उसका पालन न करने वाले और सन्मार्गी को कुमार्ग दिखाने वाले को जो पाप लगता है; वह पाप मुझे लगे। इस पर सिंह ने उसे जाने के लिए मुक्त कर दिया और वहीं आराम से लेटकर उसकी प्रतीक्षा करने लगा।

बहुला वहाँ से दौड़ती अपने स्वामी के घर पहुँची और जोर से रम्भाने लगी। ब्राह्मणी ने बछड़े को खोल दिया। दो थन बछड़े को पिलाने के बाद दो थन दुहकर, बछड़े को फिर से खोलकर दुग्ध लेकर चली गयी। अन्तिम पेन्हाव पिलाते हुए बहुला ने वत्स से कहा; पुत्र जल्दी से दूध पी ले मुझे वन में जाना है। कल से तृणादि खाकर ही सन्तुष्ट रहना। मैं वनराज को शीघ्र ही वापस आने का वचन देकर तुम्हें अन्तिम बार दुग्ध पिलाने आयी हूँ। इतना कहकर दुग्ध समाप्त होने पर बहुला वन की ओर दौड़ पड़ी। यह देखकर बछडा भी उछलता–कूदता माँ के पीछे दौड़ने लगा और जंगल में प्रतीक्षारत वनराज के पास दोनों ही क्रमशः पहुँच गये।

बहुला ने सिंह से कहा, हे वनराज! मैं आ गयी हूँ। मेरे कारण आपको भूखे रहना पड़ा इसके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ। अब आप अपनी भूख शान्त कीजिये। अब तक बछड़ा भी पहुँच चुका था। उसने सिंह से कहा हे, वनराज! मैं अपनी माँ का पर्याप्त दूध और गृह स्वामिनी द्वारा खिलायी गयी रोटियाँ खाकर

अति हृष्ट–पुष्ट हूँ। आपका पेट भरने योग्य मांस तो मेरे शरीर में भी है, साथ ही साथ मेरा मांस अति कोमल और सुस्वादु भी होगा, क्योंकि मैं अब तक दुग्ध और कोमल तृणों पर ही निर्भर रहा हूँ। अतः आप मुझे अपना भोजन बनाने की कृपा करें। इससे मेरी माता जीवित रहकर अपने पुण्यात्मा पालक–पोषक स्वामी की सेवा पुनः गर्भधारण करके कर सकेगी और इसे चुपके से भाग आने का पाप भी नहीं लगेगा। यदि आप माँ को मारेंगे तो उसे आधा भी नहीं खा सकेंगे। इस प्रकार मांस को व्यर्थ करने का पाप भी आपको लगेगा। कर्तव्यों की ऐसी अद्भुत व्याख्या सुनकर और पुत्र का माता के लिये बलिदान भाव और बहुला की सत्यभगवान पर प्रगाढ़ श्रद्धा देखकर सिंह का हृदय ऐसा द्रवित हुआ कि उसने रोते हुए बहुला और उसके बछड़े के चरणों में दण्डवत प्रणाम किया। उसने प्रतिज्ञा की कि वह तृण से पेट भरने वाले किसी भी प्राणी का आखेट नहीं करेगा और बहुत भूखा होने पर ही भेड़ियों और श्वानों का ही आखेट करेगा जिससे आखेट का मांस व्यर्थ न हो। उपरोक्त आख्यान से हमें सत्य–मार्ग पर निरन्तर अग्रसर रहते हुए अपने कर्तव्यों का पालन करने की शिक्षा मिलती है। दुःखद यह है कि आज का मनुष्य सत्य– मार्ग पर चलते हुए अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करना चाहता और ऐसा करने वालों को नितान्त मूर्ख मानता है। यहाँ विचारणीय है कि गोवत्स सिंह से विनम्र निवेदन करता है कि माता के स्थान पर वह उसे अपना भोजन बना ले क्योंकि उसकी क्षुधा पूर्ति उसके शरीर से पूर्ण रूप से हो सकती है और माता जीवित रहकर पुनः गर्भ धारणकर गोवंश की वृद्धि के साथ संसार का हित भी करती रहेगी। ऐसी दूरदर्शितायुक्त बात सुनकर हिन्स प्रवृत्ति का सिंह भी द्रवित हो सकता है किन्तु क्या आज का विलासी जीवन जीने वाले मनुष्यों पर ऐसी बातों का प्रभाव पड़ सकता है? सत्य तो यह है कि ऐसी बातें–आवाजें आज नक्कारखाने में तूती की आवाज सदृश सेमिनारों में व्याख्यान के बाद या बीच में करतल ध्वनि में दब जाती हैं या दबा दी जाती हैं। प्रतिवर्ष पाँच जून को 'विश्व पर्यावरण दिवस' पर होने वाले व्याख्यानों की अनदेखी करके पर्यावरण को और अधिक प्रदूषित करते जाना क्या इस बात का प्रमाण नहीं है?

चलभाष – 8765805322

पूजा पाराशर (स्वतंत्र लेखिका)

'बरगुर' भारतीय गाय की नस्ल

बरगुर नस्ल की गायें तमिलनाडु के इरोड जिले में बरगुर पहाड़ियों के आसपास पाई जाती हैं। पहाड़ी इलाकों में कृषि कार्यों को करने के लिए पाले जाने वाली यह नस्ल अपनी ट्रोटिंग क्षमता के लिए भी जानी जाती है। उन्हें **"लिंगाई" नामक स्थानीय आदिवासी पालते हैं।** इन गायों के दूध में उच्च पोषण और औषधीय गुण होते हैं। बरगुर नस्ल की गायों को व्यापक प्रबंधन प्रणाली में रखा जाता है और वन क्षेत्र में पाला जाता है। लिंगाई नामक स्थानीय आदिवासी मजदूरों द्वारा 50 से 200 के समूहों में "पैटी" नामक बाड़ों में रखा जाता है।

बरगुर नस्ल की गायें जंगलों में ही रहती हैं, इसलिए उन्हें विपणन के लिए पशु मेले में ले जाया जाता है, जो अगस्त माह में वार्षिक पशु मेले के दौरान एंथियूर के पास गुरुनाथ स्वामी मंदिर के उत्सव के दौरान आयोजित किया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि हर साल 1000 से अधिक बरगुर मवेशियों को बेचने के लिए यहाँ लाया जाता है। मेले के दौरान राज्य के दक्षिणी जिलों के लोगों द्वारा **"जल्लीकट्टु"** उत्सव के लिए बरगुर बैल भी खरीदे जाते हैं, जो ग्रामीण तमिलनाडु में लोकप्रिय एक पारंपरिक खेल है।

लिंगायत आदिवासी कटाई के बाद जब उन्हें खेतों में लाते हैं तो वे इन्हें रागी पुआल (एलुसीन कोराकाना) देते हैं। परंतु भूमि घास से रहित होने पर उन्हें वापस जंगलों में ले जाते हैं। बरगुर पहाड़ियों में लिंगायत अधिकतर 5 से 50 तक वाले छोटे झुंड बनाए रखते हैं। झुंड का आकार 50 से 200 तक का होता है। छोटे झुंड की ताकत वाले ये लिंगायत एक साथ जुड़ते हैं और लगभग 100 से 200 गाय–बैलों की पैटियाँ बनाते हैं और बारी– बारी से जंगल में इन नस्लों को पालते हैं।

इन जानवरों की एक और आकर्षक उपयोगिता तथाकथित **"खोराजनम"** की उपस्थिति बताई जाती है। ऐसा कहा जाता है कि जंगलों में लगातार चरने की आदत के कारण बरगुर मवेशियों में पित्त

पथरी बनने का खतरा अधिक होता है। स्थानीय लोगों द्वारा "खोराजनम" कहे जाने वाले इन पित्त पत्थरों का उपयोग यूनानी (भारतीय चिकित्सा के वैकल्पिक रूपों में से एक) का अभ्यास करने वाले शोधकर्ताओं द्वारा कुछ अज्ञात औषधीय प्रयोजनों (विशेष रूप से श्वसन रोगों से संबंधित) के लिए किया जाता है। खोराजनम का रंग पीला होता है और इसे मृत्यु के बाद लीवर/पित्ताशय से निकाला जाता है। ऐसा कहा जाता है कि मृत हुए प्रत्येक 100 में से 5–6 बरगुर नस्लों के पास ऐसे "खुराजनम" होते हैं। प्रत्येक से औसतन 8–10 ग्राम गीला "खोराजनम" लिया जाता है। गीले "खोराजनम" की कीमत लगभग रु.500 प्रति ग्राम. और सूखने के बाद इसे प्रति ग्राम 300 रुपये में बेचा जाता है।

बरगुर मवेशियों की आबादी तेजी से घट रही है। इन मवेशियों की घटती प्रवृत्ति का मुख्य कारण कम बाजार, तमिलनाडु और कर्नाटक दोनों राज्यों के वन अधिकारियों द्वारा चराई पर प्रतिबंध है। बरगुर पहाड़ियों के विभिन्न गाँवों के निवासियों ने

आदिवासी बरगुर नस्लों के संरक्षण के लिए निस्वार्थ भाव से सेवा में लगे हुए हैं। वे गायों-बैलों के झुंड को बारी-बारी से पालते हैं, उनकी देखभाल करते हैं, यहाँ तक कि उनकी देखभाल में होने वाला खर्च भी वे अपनी ओर से करते हैं। उनके दूध को भी बेचा नहीं जाता है। उनका उद्देश्य इस नस्ल को बचाना है और उनकी जनसंख्या में वृद्धि करना है।

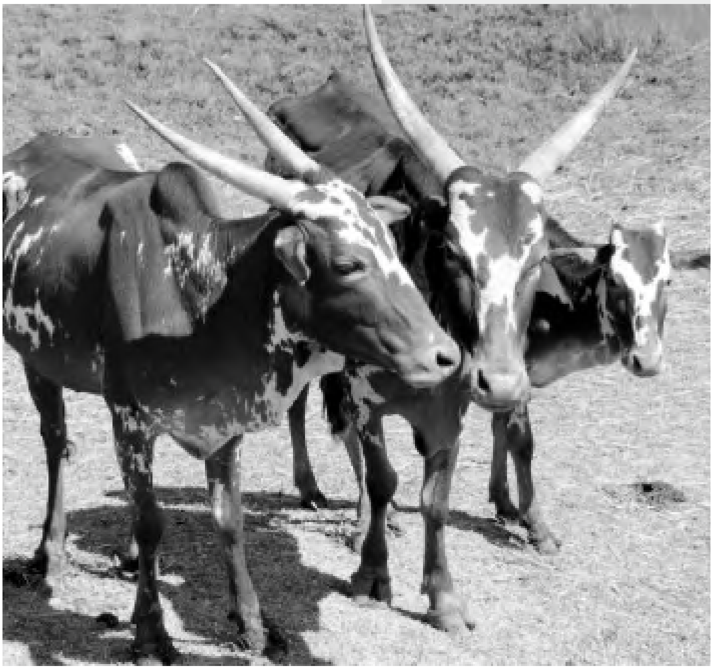

थानथाई पेरियार वन्यजीव अभयारण्य की घोषणा और वन क्षेत्रों में मवेशियों के चरने पर प्रतिबंध के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। तमिलनाडु ट्राइबल पीपल एसोसिएशन द्वारा आयोजित इस प्रदर्शन में कहा गया कि मद्रास उच्च न्यायालय ने बाघ अभयारण्यों और वन्यजीव अभयारण्यों में चरने के लिए पालतु मवेशियों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया है। उन्होंने कहा, "प्रतिबंध हमें प्रभावित कर रहा है," और पूछा, "हम अपने मवेशियों को कहाँ ले जाएँ?"

आदिवासी बरगुर नस्लों के संरक्षण के लिए निस्वार्थ भाव से सेवा में लगे हुए हैं। वे गायों–बैलों के झुंड को बारी–बारी से पालते हैं, उनकी देखभाल करते हैं, यहाँ तक कि उनकी देखभाल में होने वाला खर्च भी वे अपनी ओर से करते हैं। उनके दूध को भी बेचा नहीं जाता है। उनका उद्देश्य इस नस्ल को बचाना है और उनकी जनसंख्या में वृद्धि करना है।

दिसंबर 2023 में आईसीएआर – राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (एनबीएजीआर) द्वारा बरगुर नस्ल के संरक्षण के लिए बरगुर मवेशी अनुसंधान केंद्र को पुरस्कृत किया गया। यह केंद्र तमिलनाडु पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (TANUVAS) के पशु उत्पादन अध्ययन केंद्र निदेशालय के अधीन कार्य करता है। इसका उद्देश्य बरगुर नस्ल के मवेशियों के मूल झुंड को बनाए रखना, प्रजनन क्षेत्र में किसानों को प्रजनन स्टॉक का संरक्षण, उत्पादन और आपूर्ति करना तथा नस्ल का आनुवांशिक सुधार करना है।

(स्रोत– एग्री–आईएस, अन्य सरकारी व निजी पोर्टल)

मधु भूतड़ा 'अक्षरा'

फुरसत के पल का सदुपयोग - गौसेवा

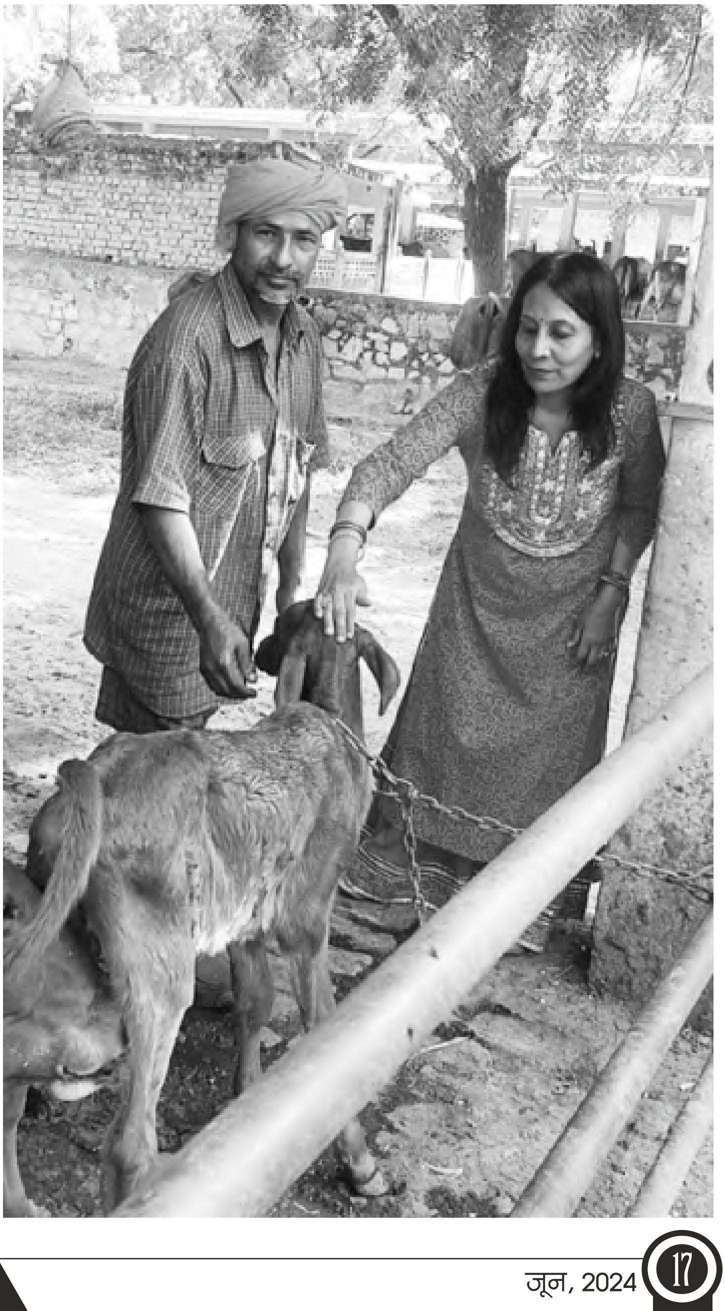

हर रविवार फुरसत के पल
करती हूँ इसका सदुपयोग
गौ माता की है उत्तम सेवा
सुखद यह जीवन संयोग।

बचपन से हमने पढ़ा और सुना है कि गाय हमारी माता है, पर क्या हम सचमुच में मानते हैं? कई वर्षों से ईश्वरीय कृपा से गौसेवा का सुअवसर मिला है, तो मानो यूँ लगता है कि इससे पहले जीवन व्यर्थ ही व्यतीत हुआ है। किसी विशेष परिणाम के लिए निरंतरता की आवश्यकता होती है। गौसेवा करना बेहद आसान है, सिर्फ पाँच रुपए का हरा चारा और अगर खुद का ही खेत है तो वो भी खर्च नहीं। आवश्यकता है तो मात्र दृढ़ संकल्प की।

जयपुर शहर की जिस गौशाला में मेरा जाना होता है, वहाँ करीबन 2500 गायें हैं और वहाँ निरंतर जाने से पता चला कि गौशाला में जितने पैसे होते हैं, वो गायों को पालने के लिए पर्याप्त नहीं होते हैं। करीब – करीब भारत की सभी गौशालाओं की यही परिस्थिति है, अतः उनको या तो दान दाताओं पर निर्भर रहना पड़ता है या सरकारी अनुदान पर। अब इसे हम देश की त्रासदी ही कहेंगे कि बचपन से जो पाठ हमें पढ़ाया जाता रहा है कि गाय हमारी माता है, पर आज उन माताओं को खाने का अभाव है, बीमार हैं तो इलाज की सुविधा उपलब्ध नहीं है, ऐसा

इसलिए कि धन का अभाव है। अब तक पूर्व सरकारी अनुदान भी कुछ ख़ास नहीं रहा है, क्योंकि पिछली सरकारों द्वारा विशेष ध्यान नहीं दिया गया, पर इस बार हाँ...! गौ संरक्षकों का कहना है कि वर्तमान सरकार द्वारा इस मुद्दे को सदन में भी उठाया गया है, साथ ही सरकारी सब्सिडी भी बढ़ाई है, जिससे गायों को पालना व रख–रखाव आसान हुआ है।

विशेष बात यह है कि गाय को जब गर्भ धारण होता है तो उनकी भी एक महिला की तरह ही देखभाल की जाती है। ऐसे में भारत की आधी उच्च और मध्यम वर्ग जनसंख्या भी अगर मन में ठान ले कि सप्ताह में एक बार गौ सेवा को अपना योगदान देगी तो भारत में कोई भी गोमाता भूखी या बीमार नहीं रहेगी। गायों के लिए पर्याप्त भोजन और फिर उसके बाद आपके लिए पर्याप्त दुग्ध और उससे बनी सामग्री की कोई कमी नहीं, कोई मिलावट नहीं। कोई ग्वाला फिर दूध में न तो पानी मिलाएगा और न ही कास्टिक सोडा। सच मानिए, देश में दूध की धारा बहने लगेगी और सब तरफ़ समृद्ध माहौल बनने लगेगा।

आपको बताना चाहती हूँ कि स्विटज़रलैंड एक ऐसा देश है, जहाँ की पूरी अर्थव्यवस्था गायों पर ही निर्भर करती है। वहाँ गायों को बहुत प्यार से रखा जाता है और उनका आदर से लालन–पालन होता है। वहाँ गाय हमारी माता है का न तो दिखावा है, न ढोंग। वहाँ दूध से बने उत्पाद विश्व में सबसे उत्कृष्ट श्रेणी में आते हैं। सवाल आपसे है कि क्या भारत में ऐसा नहीं किया जा सकता?

आपको बताना चाहती हूँ कि स्विटज़रलैंड एक ऐसा देश है, जहाँ की पूरी अर्थव्यवस्था गायों पर ही निर्भर करती है। वहाँ गायों को बहुत प्यार से रखा जाता है और उनका आदर से लालन–पालन होता है। वहाँ गाय हमारी माता है का न तो दिखावा है, न ढोंग। वहाँ दूध से बने उत्पाद विश्व में सबसे उत्कृष्ट श्रेणी में आते हैं। सवाल आपसे है कि क्या भारत में ऐसा नहीं किया जा सकता? अवश्य ऐसा संभव है। अगर इस पर हम सभी मिलकर सहयोग करें और संभवतः हमारे बीड़ा उठाने से देश के कुछ चंद नेताओं द्वारा की जाने वाली भ्रष्ट राजनीति को भी पूर्ण विराम लग जाएगा। अफ़सोस! आजादी के बाद राष्ट्र का सबसे बड़ा मुद्दा ही गोरक्षा और गोसेवा रहा है, इसीलिए राजनीति पनपती ही यहाँ से है क्योंकि यही मुख्य गढ़ है। वजह

आप सभी जानते हैं। सरकार से कोई सहायता चाहिए तो उनकी चाकरी तो बजानी ही होगी लेकिन अगर हमने योगदान भरपूर मात्रा में शुरू कर दिया तो बंटवारे की राजनीति वाला वातावरण ही समाप्त हो जाएगा।

अपने बच्चे को जन्म देने के बाद माँ का दूध और विकल्प में गाय का अमृत तुल्य दूध सर्वोत्तम होता है और बच्चों को वही पिलाया जाता है, फिर बच्चा चाहे हिन्दू का हो या मुस्लिम का, सिख का हो या ईसाई का। इसलिए सेवा भी सबको मिलकर करनी चाहिए। भारत देश की प्रमुख राजनीति गोमाता पर है, जिसका स्वरूप बद से बदतर होता चला गया है। उसे अब देश की सिर्फ आम जनता ही सुधार सकती है।

गाय से जुड़े पंच तत्व दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोबर के

सम्मिश्रण को पंचगव्य कहते हैं, जो हिंदू धर्म के इंसान के जन्म से लेकर अंतिम कपाल क्रिया तक विशेष महत्व रखते हैं। कोई भी शुभ मांगलिक कार्य, धार्मिक अनुष्ठान बिना पंचगव्य के पूर्ण नहीं होते हैं। भारतीय गायों की विशेषता यह है कि डील–डौल छरहरा होती है, जो सिंह के समान आगे से चौड़ी और पीछे से पतली होती है। जिसकी रीढ़ की हड्डी में सूर्यकेतु नाड़ी होती है, नाभि उभरी होती है और यही नहीं, गाय के हर अंग–प्रत्यंग पर स्वयं प्रभु विराजते हैं।

कोलकाता में किसी विशेष शख्स से उनके कार्यालय में मुलाकात हुई तो देखा कि उन महाशय का वज़न काफी बढ़ा है तो मैंने पूछा कि इतना वजन क्यों है? तो उनका जवाब में कहना था कि ऑफिस से रात को घर जाता हूँ, खाना खाता हूँ और सो जाता हूँ। मैंने उनसे पूछा कि आप दूध, दही का सेवन तो करते ही होंगे, तो जवाब में हाँ था। मैंने उन्हें एक सलाह दी कि आपके आसपास गाय तो अवश्य होगी तो क्यों नहीं खाने के बाद उसे गुड़ खिलाने, रोटी, हरी सब्जी, फल के छिलके इत्यादि खिलाने के लिए जाएं। ऐसे में आपकी सैर भी हो जाएगी और गोसेवा भी। उन महाशय को मेरा यह मशवरा काफी पसंद आया और कहा कि ऐसा तो मैंने सोचा भी न था। हो सकता है कि आपको भी मेरा यह विचार पसंद आ जाए। मन में सेवा भाव जाग्रत करो तो रास्ते स्वयं खुलते चले जाएँगे। आपको एक राज़ की बात बताऊँ कि जिस गौशाला का मैंने ऊपर उल्लेख किया है, वहाँ की अधिकतर गायें मुझे देख कर खुश होती हैं और मुझे भी उनकी सेवा करके बेहद खुशी मिलती है। हिंदू संस्कृति की मान्यतानुसार गाय में 33 कोटि देवी–देवताओं का वास होता है, और विशेषकर गाय की पूँछ में नाग देवता का वास होता है, जिससे सर पर झाड़ा लगवाने से हमें दुख, कष्ट और विपदाओं से मुक्ति मिलती है।

गाय अगर हमारी माता है तो वो प्रेम, स्नेह, सम्मान व करुणा की अधिकारी है। गाय माता की रक्षा के लिए हिंसक होना, गुंडागर्दी करना, मारपीट करना अन्यायपूर्ण है। उसकी हत्या कर उसका मांस खाना निरीह–जघन्य पाप है। अतः भारत के सभी देशवासियों को यह समझना होगा कि गोमाता का सम्मान और संवर्धन ही विकास का मूलमंत्र है। जिन लोगों को अपने बचपन के पाठ पर भरोसा है वे निश्चित तौर पर तन–मन–धन से गोमाता की सेवा अवश्य करेंगे।

गर्व से कहो कि गाय हमारी माता है, बचपन की मस्ती में कहा करते थे कि हमको कुछ नहीं आता है, पर आज....

हमको सब कुछ आता है
सेवा करना हमको भाता है
गौसेवा से इंसान
वो पुण्य कमाता है
जिससे वह जीवन पर्यन्त
सुख ऐश्वर्य वैभव कीर्ति पाता है
और अंतिम समय में
भवसागर से पार हो जाता है।

तेलंगाना गोरक्षा विभाग की बैठक

लोअर टैंकबंड स्थित भाग्यनगर गोसेवा सदन में विश्व हिन्दू परिषद के गोरक्षा विभाग (तेलंगाना) देशी गोवंश रक्षण संवर्धन समिति द्वारा गोरक्षा हेतु विभिन्न गोरक्षक दलों की बैठक आयोजित की गई। बैठक में सर्वश्री यादगिरी राव, बालकृष्ण गुरू स्वामी, वीर धर्म विजय स्वामी, विवेकानंद महाराज, कमलेश महाराज, ए. रामाराव, रमेश यादगिरी राव, अंजय्या, जसमंत भाई पटेल, श्रीधर, योगेश प्रभु, फणि कुमार, अधिवक्ता सुनील, मुकेश चौहान जैन व अन्य कार्यकर्ता उपस्थित थे।

मृत गोवंश एवं ट्रक जप्त किया गया

अशोक नगर (मध्य प्रदेश)। गत माह बमनई ग्राम के टोल नाके पर गो वंश तस्करी में मृत गोवंश एवं ट्रक जप्त किया गया था जिसको लेकर विश्व हिंदू परिषद – बजरंग दल गौ रक्षा द्वारा जिलाधीश महोदय एवं पुलिस अधीक्षक महोदय को ज्ञापन दिया गया। जिसमें मांग की गई है कि अभिलंब ट्रक राजसात किया जाए और आरोपियों पर राशुका की कार्रवाई की जाए। कार्यवाही न किये जाने पर गोरक्षक आंदोलन करने के लिए बाध्य होंगे। ज्ञापन देने वालों में प्रांत धर्म प्रसार प्रमुख डॉक्टर दीपक मिश्रा, बजरंग दल विभाग संयोजक वेदराम लोधी, जिला अध्यक्ष दिनेश जैन, विभाग सहधर्म प्रसार प्रमुख अशोक रघुवंशी, जिला कोषाध्यक्ष रामकुमार चौधरी, गोसेवक सोनू जैन विकास जैन बाली, रामकृष्ण कुशवाहा, रामजीलाल शर्मा, आलोक दुबे, वीरेंद्र सिंह यादव, छोटू चंदेल, देवेंद्र पाल आदि शामिल थे ।

गोरक्षकों ने जान जोखिम में डालकर गोवंश से भरी कंटेनर पकड़ी

प्रयागराज (उजाला शिखर)। विश्व हिंदू परिषद, गोरक्षा विभाग के प्रांत मंत्री लाल मणि तिवारी को कार्यकर्ताओं से सूचना मिली कि कंटेनर नंबर 23—3887 से गोवंश को कानपुर से लादकर कसाई पश्चिम बंगाल काटने हेतु ले जा रहे हैं। सूचना मिलने के तुरंत बाद बनारस—कानपुर हाईवे पर कार्यकर्ताओं के साथ घेराबंदी की गई। सुबह करीब 04.45 बजे सोराव हाईवे के पास उक्त कंटेनर आती दिखाई दी जिसको पकड़ने के लिए कार्यकर्ताओं ने पीछा किया। चालक तेजी से कंटेनर आगे भगाने लगा और रोड गोपीगंज से थोड़ा पहले कंटेनर को मोड़कर पुनः कानपुर की तरफ भागने लगा जिस पर प्रांत मंत्री ने डीसीपी गंगानगर को मोबाइल पर सूचना देकर गाड़ी को पकड़वाने में सहयोग मांगा और कार्यकर्ताओं को सहसो टोल प्लाजा पर घेराबंदी करने के लिए कहा और स्वयं गाड़ी का पीछा करते रहे। सहसों टोल प्लाजा पर घिरा देखकर टोल प्लाजा के लगभग 400 मीटर पहले ही कंटेनर खड़ी करके गाड़ी से चार लोग कूदकर भागने लगे। प्रांत मंत्री ने दौड़ाया तो जान से मारने की नीयत से गाड़ी से कूदे लोगों ने प्रांत मंत्री लाल मणि तिवारी पर अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी लेकिन प्रांत मंत्री अपने जान की बाजी लगाकर कसाइयों को दौड़ाते रहे और पुलिस वाले भी कसाइयों के पीछे दौड़ने लगे जिस पर कुछ देर बाद लाल मणि तिवारी व उनके साथियों तथा प्रभारी निरीक्षक सराय इनायत व उनके सहयोगियों के संयुक्त प्रयास से दो कसाइयों को पकड़ लिया गया। पकड़े गए कंटेनर में 29 गोवंशों को बेरहमी पूर्वक चारों—पैर और मुंह बांधकर भरा गया था जिसके चलते 9 गोवंशजों की मृत्यु हो गई व 20 गोवंश गंभीर स्थिति में घायल थे जिन्हें गौशाला पहुंचाया गया। पकड़े गए कसाइयों के पास तमंचा, दो जिंदा तथा एक खोखा कारतूस पुलिस ने मौके से बरामद किया। शेष दो लोग फायरिंग करते हुए फरार हो गए। गोवंशों को पकड़ने में वेद मनी तिवारी, रोहित त्रिपाठी, लवलेश बजरंगी, विनय तिवारी, बृजेंद्र कुमार आदि कार्यकर्ताओं का विशेष योगदान रहा।

'अहिंसा परमो धर्मः'

गोवंश-हत्या की चीख-पुकार, भूकम्प, बाढ़ की महामार जरा सोचें आखिर इन्हें भी तो जीने का हक है!

बहनो और भाइयो,

क्रूर कर्मों में हत्या सबसे बढ़कर है किन्तु मांस–भोजन तो उससे भी घोर क्रूर कर्म है। मांस के लिए एक तो मूक, निरपराध एवं विवश पशुओं की गर्दन पर छुरी फेरकर उनकी हत्या की जाती है, फिर उसके शव के टुकड़े–टुकड़े करके रसोई में पकाया जाता है, फिर दाँतों से चबा चबाकर उदरस्थ किया जाता है और इतना करने के बाद स्वादपूर्ण संतोष की स्वांस ली जाती है। उफ! कितना पैशाचिक कृत्य है। कोई हत्यारा भी अपने शत्रु को अधिक–से–अधिक दंडित कर छोड़ देता है, किन्तु यह मांस भक्षक कोई अपराध न करने पर भी अकारण पशु को जबरदस्ती मारकर काटता, बोटी–बोटा अलग करता और फिर सहर्ष सपरिवार बैठकर स्वाद से खाता और संतोष प्रकट करता है।''

यह कौन–सी मनुष्यता है, कौन–सी सभ्यता है? इन सर्वश्रेष्ठता का दंभ करने वालों से पूछा जाए कि क्या तुम्हारी सर्वश्रेष्ठता का यही लक्षण है। तुम्हारी सभ्यता, पहचान और मनुष्यता की कसौटी यही है? उस निरीह पशु का क्या अपराध था, जिसे उसके स्वजनों और साथियों के बीच से पकड़कर आपने काट डाला और पकाकर खा लिया। अभी

थोड़ी देर पहले जो ईश्वर की सृष्टि के बीच खेलता–खाता खुश हो रहा था, उस प्राणी को आपने बिना विचारे ऐसे मार डाला मानो यह जीवन की कोई स्वाभाविक क्रिया है, जिस पर सोच–विचार करने की आवश्यकता ही नहीं। उसका यदि कोई अपराध था तो केवल यह कि वह कमजोर आपके आश्रित और आप पर विश्वास करने वाला था, न जाने वे तथाकथित मनुष्य किस मिट्टी के बने होते हैं जो ऐसा कुकृत्य करते हैं।

आज तो हमारे समाज में अनगिनत ऐसी दुकानें खुलती जा रही हैं जिनसे प्रतिदिन न जाने कितने निरीह जीवों को मौत के घाट उतार दिया जाता है। हमारे समाज में आज बहुत–से भाई–बहन ऐसे मिल जायेंगे जो मांस बड़े शौक से खाते हैं। जब उन्हें समझाने की कोशिश की तो वे तर्कों से काट देते हैं। पर ऐसे लोगों ने कभी सोचा है कि जब उनकी एक अंगुली कटती है तो उनको कितना दर्द होता है। फिर इन जीवों को तो बड़ी बेरहमी से काटा जाता है, जो क्रूरता का चरम पहलु है। जिस समय पशु की हत्या होती है उस समय उसके अन्दर से एक चीत्कार रूपी तरंग निकलती है, जो मारने वालों, खाने वालों एवं पर्यावरण के ऊपर बहुत भयानक रूप से प्रभाव डालती है। उसकी आह रूपी सूक्ष्म तरंग से व्यक्ति रोग, दुर्घटना एवं अकाल मृत्यु का शिकार होता चला जा रहा है, जो आज सरेआम देखने को मिल रहा है। वैज्ञानिकों का शोध है कि उसके चीत्कार से प्रकृति प्रभावित होती है, जिसके कारण से वह कुपित होकर भूकम्प, बाढ़ एवं अन्य आपदाओं के रूप में मनुष्य जाति पर कहर बरपाती (ढहाती) है। कहा जाता है कि प्रकृति के सारे जीवों में परमात्मा का वास होता है। तो हम यह कैसे सोच सकते हैं कि देवी देवताओं को इन निरीह पशुओं की बली देने से क्या वह खुश हो सकते हैं।

प्रस्तुति : धर्मचंद्र, चरखी दादरी

Sanjay Raman "Vidyavachaspati"

RELATING ARTIFICIAL INTELLIGENCE (AI) WITH COW SCIENCE FOR SUSTAINABLE DEVELOPMENT

Artificial Intelligence (AI) is pivotal in advancing sustainable development by optimizing resource management, enhancing energy efficiency and promoting environmental conservation. AI-driven technologies enable precision agriculture, reducing waste and improving crop yields, while smart grids and energy management systems lower carbon footprints. Additionally, AI facilitates the monitoring and protection of ecosystems, contributing to biodiversity preservation. By integrating AI into sustainable practices, we can address global challenges such as climate change, resource depletion and sustainable urban and rural development more effectively.

The fields of artificial intelligence (AI) and its reference with that of cow science may seem unrelated at first glance, but both definitely have the potential to play a crucial role in sustainable development. By combining these two fields, we can very well improve our understanding of the needs of cows, optimize their management and reduce the environmental impact of their farming. This can lead to significant benefits for farmers, consumers and the environment.

Cow science, also known as bovine science, is the study of the biology, behavior and management of cows. This field encompasses many different but related disciplines, including genetics, nutrition, physiology and behavior. Cow science is essential for the sustainable management of cows, which are important sources of food and livelihood for many people around the world. Cow science plays a critical role in maximizing the productivity of cows while

minimizing the environmental impact of their farming.

On the other hand, artificial intelligence refers to the ability of machines to perform tasks that would normally require human intelligence. AI has been used in many different fields, from healthcare to finance and has the potential to revolutionize many aspects of our lives. AI can help us make better decisions, optimize complex systems and automate routine tasks. By using AI to study cow's perspective and their environment, we can gain insights that would be difficult or impossible to obtain through traditional methods.

One of the key applications of AI in cow science is in the development of precision farming. Precision farming refers to the use of data and technology to optimize agricultural production. By using sensors, drones and other technologies to collect data on soil conditions, weather patterns and other environmental factors, farmers can make more informed decisions about when and how to plant crops, fertilize fields and manage livestock. AI can help farmers analyze this data and develop customized management plans that are tailored to the specific needs of their cows and their environment.

Another area where AI can be applied to cow science is in the development of predictive models. Predictive models use data to make predictions about future events. By analyzing historical data on cow behavior, health and productivity, AI can develop predictive models that can help farmers anticipate potential problems and take proactive steps to prevent them. For example, a predictive model could be used to predict when a cow is likely to become ill, allowing farmers to take preventative measures to keep the cow healthy.

AI can also be used to optimize the use of resources in cow farming. For example, by analyzing data on the nutritional needs of cows and the composition of different types of feed, AI can develop customized feeding plans that maximize the health and productivity of cows while minimizing waste. This can help farmers reduce their reliance on expensive and environmentally damaging inputs like fertilizer and feed.

AI can also be used to improve the welfare of cows. By analyzing data on cow behavior and physiology, AI can identify when cows are in distress or experiencing pain. This information can be used to develop interventions that improve the welfare of cows and reduce their suffering. For example, a sensor could be placed on a cow's leg to

monitor its movement and identify when it is experiencing discomfort, allowing farmers to adjust its living conditions or medical treatment as necessary.

In addition to these applications, AI can also be used to improve the efficiency of cow farming operations. For example, AI can be used to automate routine tasks like milking and feeding, reducing the workload of farmers and improving the consistency and quality of these tasks. AI can also be used to optimize the use of labor and other resources on the farm, reducing the costs of production and improving the profitability of cow farming operations.

However, the use of AI in cow science also presents some challenges and concerns. One major concern is the potential loss of jobs as AI is used to automate tasks that were previously performed by humans. This could have significant economic and social impacts in communities where cow farming is a major source of employment.

Another concern is the potential for AI to reinforce existing inequalities in the cow farming industry. AI systems are only as good as the data they are trained on and if the data used to train these systems is biased or incomplete, it can unfortunately lead to discriminatory outcomes. For instance, if AI is used to identify cows that are most profitable to breed, it could reinforce existing biases towards certain breeds or genetic traits.

Therefore to address these concerns, it is important to ensure that the development and implementation of AI in cow science is done in a way that is transparent, accountable and equitable. This requires careful attention to the data used to train AI systems, as well as the development of ethical frameworks that guide the use of AI in cow farming.

In conclusion, the combination of AI and cow science has the potential to revolutionize the way we manage cows and their impact on the environment. By using AI to monitor cows and their environment, develop predictive models, optimize resource use, improve welfare, and increase efficiency, we can improve the sustainability of cow farming and reduce its environmental impact. However, it is important to address the challenges and concerns associated with the use of AI in cow science to ensure that it is implemented in a way that is transparent, accountable and equitable. By doing so, we can unlock the full potential of AI in cow science and achieve sustainable development in this important field.

Obituary

Gobhakt Dr. Ganga Satyam garu MD (Ayurveda) passed away on 28-5-2024-Tuesday at 7.30am. His age is 87years. He was born at Banda Lingapuram (vill) Met palli (mdl), in Kareem nagar (dt) during 1937. He worked as Principal in Govt. Ayurved college- Vijayawada for a period of 10years, & retired as Reader in BRKR Govt. Ayurveda College- Hyderabad, during 1994. He wrote no.of books on " Goraksha" and "Gowseva" no.of articles on "panchagavya",. chikitcha ie using and mixing of 5 products of cow in a prescribed manner. After retire from service, he worked as one of the Tolly member in "Kendreeya Goraksha team" in VHP for no. of years. His final rituals will be performed on 29-5-24- Wednesday (between 8am to 10am) at Ramanthapur ie Amberpet,(Harischadra nagar) burial ground). I pray the Almighty that His soul may rest in peace.

UPI

BHIM UPI Payments Accepted at
BHARTIYA GOVANSH RAKSHAN SAMVARDHAN PARISHAD

Account Number : 04072010006910, IFSC Code: PUNB0040710

Scan and Pay using any UPI supported Apps

गोसम्पदा पत्रिका के
सदस्य बनने के लिए
सदस्यता राशि UPI द्वारा
भुगतान कर सकते हैं

गाय एवं छाया

पर्यावरण दिवस (05 जून) पर विशेष

नवल छाया, बी-314, हरि मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-17 मो. 9460142430

तरुवर ठंडी छाँह में,
बाँट रहे हैं ज्ञान।
गो भी नीचे बैठती,
समझे तरुवर दान।।

पेड़ों की छाया हमें,
देती है नित ज्ञान।
जीना है यदि मान से,
गो–माँ को पहचान।।

तरुवर जब से कट रहे,
छाया का बेहाल।
कहाँ रखें हम गाय को,
कैसे होय निहाल।।

आओ अब मन मीत सब,
चलें हमारे गाँव।
जहाँ बहे शीतल पवन,
गाय रहे तरु छाँव।।

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6"
Email : gosampada@gmail.com
website : www.vhp.org

Registered No. DL-SW-01/4027/24-26
RNI No. 69508/98 प्रस्तुति : 13–14
प्रकाशन तिथि : 11 जून, 2024

कांस्य से बने नंदियों में दिखीं भारत की लोक कलाएँ...

जबलपुर (मध्य प्रदेश)। जहाँ – जहाँ नजरें गईं वहाँ–वहाँ नंदी के कई रूप दिखाई दिए। यहाँ 11वीं शताब्दी के तमिलनाडु के नंदी विशाल रूप में दिख रहे हैं, तो वहीं 12वीं शताब्दी के कर्नाटक के नंदी आकर्षण का केन्द्र हैं। इस बीच कांस्य से बने लोक कला को प्रदर्शित करते हुए नंदी को भी सभी ने अपने मोबाइल के कैमरे में कैद किया। यह अवसर रहा **विश्व संग्रहालय दिवस के अवसर पर रानी दुर्गावती संग्रहालय में नंदी प्रतिमाएँ विषय पर प्रदर्शित छायाचित्र प्रदर्शनी के शुभारंभ का।** वहाँ पुरातत्व एवं संरक्षण विषय पर व्याख्यानमाला का आयोजन भी किया गया।

चीन से लेकर ऑस्ट्रेलिया तक...

विश्व कला संग्रहालय बीजिंग चीन में रखे विशालकाय नंदी, पाटलीपुत्र बिहार के तीसरी शताब्दी के नंदी, नेशनल गैलरी ऑस्ट्रेलिया में रखे 12वीं शताब्दी के नंदी, खजुराहो के 10वीं से 11वीं शताब्दी के नंदी के छायाचित्र एक ही जगह देखने को मिल रहे हैं। 5 दिवसीय प्रदर्शनी के शुभारंभ अवसर पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अधीक्षक पुरातत्वविद् डॉ. शिवकांत वाजपेयी, डॉ. यतीश जैन, डॉ. रंजना जैन, प्रदीप पुरविया व प्रमोद कुमार राव ने पुरातत्व एवं संरक्षण विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किये। संचालन राजकुमार रौसल्या द्वारा किया गया।

प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र प्रसाद सिंहल ने रायल प्रेस,
बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली से मुद्रित कर भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद् (विहिप)
संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 के लिए प्रकाशित की। संपादक - देवेन्द्र नायक